[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3587

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग और राग का समन्वयः काँगड़ा चित्रों के संदर्भ में

मंजू गौतम
शोध छात्रा
चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

काँगड़ा चित्रकला में संगीत व चित्रकला का अद्भूत समन्वय संसार भर की कलाओं में एक अद्वितीय उपलब्धि है यही कारण है कि काँगड़ा चित्रकला को कला विद्वानों ने समस्त पहाड़ी चित्रकला का पर्याय भी माना है। काँगड़ा चित्रशैली में निर्मित चित्रो की रंग योजना अनूठी है ऐसा प्रतीत होता है कि काँगड़ा का समस्त प्रकृति सौन्दर्य कलाकार ने रंग व रेखाओं के माध्यम से चित्रों में भर दिया। विषयों की विविधता इस शैली का गुण है। यहाँ के कलाकार ने साहित्य एवं काव्य के साथ संगीत की अमूर्त, तथा ध्वन्यात्मक विषय वस्तु को भी रंग एवं रेखाओं द्वारा साकार रूप प्रदान किया जो कि विश्व की किसी अन्य कला में दुर्लभ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति राग और रागिनियों पर आधारित है। **''रागमाला'' अर्थात् रागों की माला''** काँगड़ा चित्रकला के साथ–साथ समस्त लघु चित्र शैलियों की भी का मुख्य विषय रही। काँगड़ा कलाकारों ने मध्यकालीन युग के संगीताचार्य क्षेमकर्ण द्वारा रचित **'रागमाला'** ग्रन्थ को अपनी विषय वस्तु का आधार बनाया था। क्षेमकर्ण की रागमाला में रागो का ध्यान निर्धारण संस्कृत काव्य में किया है। रागो की ध्वनि मेल अथवा उनकी ध्वनि के अनुसार उपमेय लक्षित करके उद्वत किया गया है, प्रत्येक राग की अपनी विशिष्ट प्रवृत्ति, भावना होती है। वैसे 'राग–रागनियो के स्वरूप के बारे में काफी मतभेद रहा है, जिस प्रकार 84 योग, 84 भोगों का समावेश हमारे यहाँ मान्य है, उसी प्रकार 84 रागिनियों की कल्पना भी की गई है। पर अधिकांश संगीत सम्बन्धी ग्रन्थों तथा कृष्ण भक्ति काव्य में 6 राग और 36 रागिनियाँ मुख्य है। क्षेमकर्ण ने छः मुख्य रागो को स्वीकार किया है, भैरव, मालकौंस हिंडोल, दीपक, मेघ और श्री। प्रत्येक राग की पाँच रागिनियाँ और आठ रागपुत्र है। इनमें केवल श्री राग की छः रागिनियॉ एवं नौ रागपुत्र है। इस प्रकार रागमाला परिवार में कुल राग, रागिनियों और रागपुत्रों की संख्या 86 बनती है।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में **''रागमाला''** चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। रागमाला चित्रण के अन्तर्गत चित्रकारों ने रंगो के वास्तविक स्वरूप और उनकी ध्वनि की उपमा हेतु निर्दिष्ट उपमेय लक्षित करके बनाये है। गायन एवं वादन द्वारा अभिव्यक्त किये जाने वाले राग को रूपाकार में चित्रित करने में काँगड़ा के चित्रकारों ने अद्भूत कल्पनाशीलता का परिचय दिया है विशेषकर रागिनियो को कुशलतापूर्णत अंकित किया गया है। रागमाला विषय के अन्तर्गत राग–रागिनियों एवं उनके पुत्रों के ध्यान चित्रों का अंकन उनकी प्रकृति, गायन काल, ऋतु और ध्वनि मेल के मान नियमों के अन्तर्गत हुआ है। राग व रागिनी के मानवाकार स्वरूप में कलाकार ने इन्हें देवी–देवता एवं नायक–नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। उदाहरण– स्वरूप **'मेघराग'** में कृष्ण को वर्षा के मेघों का अभिवादन करते दिखाया गया है। वही **'राग हिंडोला'** में कृष्ण को नायक रूप में झूले पर बैठे कई गोपियों के साथ चित्रित किया गया है।

इसके अतिरिक्त रागिनियों को चित्रित करने के लिये कलाकार ने प्रेम दृश्यों को आधार बनाया। 'प्रेम' केशवदास' द्वारा दी परिभाषा के अनुसार **'प्रेम' के दो पक्ष संयोग एवं वियोग के रूप में दर्षाया गया है।** इस संयोग वियोग की जो परिस्थितियॉ निर्मित होती है कलाकार ने रागमाला के कई चित्रो में चित्रित किया है और उससे सम्बन्धित विभिन्न राग रागिनियों को चित्रित किया जो कि काँगड़ा चित्रण शैली के श्रृंगार पक्ष को हमारे सामने प्रस्तुत करने में सहायक होते है तथा इससे राग एवं रस का भी सम्बन्ध स्पष्ट होता है। रस ही वह तत्व है जो हमारे अंतस् में स्थायी रूप से अवस्थित रहने वाले स्थायी भाव से जब सम्मुख उपस्थित प्रत्यय रूप से अथवा कल्पना से तादात्म्य स्थापित करता है तब रस निष्पति होती है। अर्थात किसी भाव का रूप हमारे सम्मुख उपस्थित होता है।

चित्रकार इसी कल्पना को अपनी रंग रेखाओं व आकरो के माध्यम से हमारे सम्मुख साक्षात् स्वरूप उपस्थित करता है। काँगड़ा कलाकार ने रागिनियों के चित्रण में अधिकांशत प्रेम के वियोग पक्ष को ही प्रस्तुत किया है। उदाहरण स्वरूप **'देवगन्धारी रागिनी'** को नवंगा नायिका के रूप में चित्रित किया है। चित्र में नायिका को शिव की पूजा करते हुये तथा अपने प्रिय में सकुशल घर लौटने के अराधना करते हुये दर्शाया है। **''गुजारी रागिनी''** को वीणा तथा दो हिरन के जोड़े के साथ चित्रित किया गया है। **''सोराठी रागिनी''** को मोर के साथ चित्रित किया गया है। इन सभी चित्रो में रागिनी स्वरूप नायिका को किसी न किसी पशु, पक्षी जीव के साथ चित्रित किया गया है जो कि प्रतीकात्मक रूप में वियोग की परिस्थिति को प्रस्तुत कर रहे है तथा रागिनी को विरहणी नायिका रूप में। संगीत व राग के अमूर्त रूप को मूर्तता प्रदान करने लिये काँगड़ा के चित्रकार ने नई–नई परिस्थितियों तथा वातावरण प्रस्तुत किया।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रागमाला चित्र रंग राग के मनोवैज्ञानिक संकेतो को भी प्रदर्शित करती है। अर्थात संगीत कला जिन दृश्य अदृश्य सूक्ष्मताओं का निबन्धन, ध्वनि लय के सहारे करती है, उन्हें चित्रकला रंगो, रेखाओ, आकारों के माध्यम से व्यक्त करती है। अतः रागमाला चित्र संगीतकला और चित्रकला की पास्परिकता का घोत्तक है। राग–रागिनी सम्बद्ध वातावरण दृश्य विषय इस काल तथा भाव का ऐसा व्यंजक चित्रण है कि चित्र के देखने मात्र से राग अथवा रागिनी के स्वरूप, प्रकृति, समय आदि का सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। चित्र में रागों के अनुसार वेशभूषा में भी परिवर्तन आता है। संयोग वियोग दोनो की अवस्थाओ का ऋतुओं के परिपेक्ष्य में अत्यन्त मनोहरी चित्रण काँगड़ा में मिलता है। **'हिण्डोला राग'** में कलाकार ने लाल, पीला रंगों के माध्यम से श्रावन ऋतु को बड़े ही मनोहारी रूप में प्रदर्शित किया है तथा रंग हिण्डोल को मानवीकृत रूप में साकार करने के लिए नायक रूप में कृष्ण का चित्रण किया है।

काँगड़ा के कलाकारों ने चित्रों में लाल, पीला, नीला, हरा रंग अधिक प्रयोग किया। आश्चर्य इस बात का है कि इन रंगो भी चमक आज भी वैसी ही है। ये रंग अपनी मूल प्रखरता, तेजस्विता और आभा से पूर्ण है। इस कारण सम्पूर्ण चित्र में सौदर्य व आकर्षण निहित है। ई.वी. हावेल ने लिखा **''जिस प्रकार भारतीय संगीत में लयात्मकता संबंधी उलझन नही बल्कि उसमें वेगयुक्त स्वर–माधुर्य का सूक्षमता पूर्ण प्रवाह है उसी प्रकार चित्रकला में भी भारतीय कलाकार गहरे साये टूटे हुये, रंगो का उपयोग नही करता, वह तो अपने रंग–संगति की पूर्ण सधी हुई ताल के द्वारा प्रकाष और वातावरण का प्रभाव उत्पन्न करता है।''**

रागमाला चित्रो की समस्त श्रृंखला को वास्तव में संगीत की अपेक्षा रंगो की कला कहा जाना चाहिये, क्योंकि चित्रकार ने विभिन्न रंगो से भावगत स्थिति को दर्शाया है। प्राथमिक रंगो का इतने संतुलित ढंग से चित्रण किया है कि कुछ सीर्मित रंग योजना में विशाल मनोभाव को प्रदर्शित करने में सक्षम है। एम0एस0 धावा ने रंग योजना विषय में लिखा है ''यह रंग योजना प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक है जिसका सीधा सम्बन्ध भारतीय चित्रण की प्रारम्भिक परम्परा से जुड़ा है।''

''काँगड़ा चित्रण का प्राण भाव है और उसका संचार रेखा में है।'' यहाँ के चित्रों पर यह युक्ति सार्थक प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1 *किशोरी लाल वैध ''पहाड़ी चित्रकला'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, 1969।*
2 *डॉ सुनील कुमार सक्सेना ''काँगड़ा की चित्रकला में श्रृंगार,'' न्यू साकेत कालोनी बी0एच0यू0 वाराणसी, 2009।*
3 *Karl Kahandalwala "Pahari Miniature Painting" New Delhi, 1958.*
4 *M.S. Randawa "Kangra Ragamala Painting", New Delhi.*
5 *Vishwa Chander ohri, The Technique of Pahari Painting, New Delhi.*
6 *R.K. Tandon "Pahari Ragamales" Bangalore, 1983.*